



International Journal of Languages, Literature and Linguistic Research (IJLLR)

(An International Peer-Reviewed (Refereed) Journal)

Website-<https://ijllr.nobleinkresearch.com/>

Email- editor@ijllr.nobleinkresearch.com

ISSN Online: 3140-0027



"राम की शक्ति पूजा" में शक्ति की अवधारणा और निराला का नवजागरण बोध

Dr. Santosh Kumar Ahirwar*

Assistant Professor, Department of Hindi

Govt Narmada College, Narmadapuram, Madhya Pradesh, India

*Corresponding author E-mail: - santoshkumarahirwar1982@gmail.com

Received: 19 July 2026, Revised: 25 August 2026, Accepted: 05 September 2026, Available Online: 30 September, 2026

<https://doi.org/10.68219/1a1p1m41>

सारांश

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की राम की शक्ति पूजा हिंदी साहित्य की उन महत्वपूर्ण काव्य-कृतियों में है, जिनमें पौराणिक आख्यान को आधुनिक जीवन-बोध और सामाजिक चेतना के साथ पुनर्परिभाषित किया गया है। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य कविता में निहित 'शक्ति' की अवधारणा का विश्लेषण करते हुए उसके संबंध को निराला के नवजागरण-बोध से स्थापित करना है। कविता में राम पारंपरिक सर्वशक्तिमान देवता के रूप में नहीं, बल्कि संशय, निराशा, आत्मसंघर्ष और संघर्षशीलता से गुजरने वाले मनुष्य के रूप में सामने आते हैं। रावण के विरुद्ध युद्ध की बाहरी चुनौती के साथ-साथ राम के भीतर चलने वाला आत्मसंघर्ष कविता को एक गहरे मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक आयाम प्रदान करता है। शक्ति-आराधना इस संदर्भ में केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि आत्मबल, संकल्प, आत्मजागरण और परिवर्तनकारी चेतना की प्रक्रिया बन जाती है। अध्ययन यह विश्लेषित करता है कि निराला भारतीय पौराणिक परंपरा का पुनर्पाठ करते हुए शक्ति को किस प्रकार आधुनिक मनुष्य की संघर्षशील चेतना से जोड़ते हैं। राम का मानवीकरण, उनकी आत्मपीड़ा, संकल्प और शक्ति की पुनर्प्राप्ति परंपरा और आधुनिकता के बीच एक महत्वपूर्ण वैचारिक सेतु निर्मित करते हैं। कविता में शक्ति की अवधारणा व्यक्तिगत आत्मबल से आगे बढ़कर सामाजिक और सामूहिक जागरण की संभावना का संकेत देती है। इस दृष्टि से राम की शक्ति पूजा में मिथक केवल अतीत की स्मृति नहीं रहता, बल्कि वर्तमान को संबोधित करने वाला सक्रिय सांस्कृतिक माध्यम बन जाता है। शोध का केंद्रीय तर्क है कि निराला के लिए शक्ति बाहरी दैवी सत्ता मात्र नहीं, बल्कि मनुष्य के भीतर निहित आत्मचेतना, संघर्षशीलता और परिवर्तन की ऊर्जा का प्रतीक है। इसी रूपांतरण के माध्यम से कविता में परंपरा के पुनर्मूल्यांकन, आधुनिक विवेक और नवजागरण की चेतना का सशक्त समन्वय दिखाई देता है।

कुंजी-शब्द: राम की शक्ति पूजा; सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'; शक्ति; नवजागरण; आत्मजागरण; राम का मानवीकरण; संघर्ष-चेतना; आधुनिकता; पौराणिक पुनर्पाठ; सामाजिक चेतना; राष्ट्रीय चेतना; परंपरा और आधुनिकता

1. भूमिका: 'राम की शक्ति पूजा' का साहित्यिक और ऐतिहासिक संदर्भ

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' हिंदी साहित्य के आधुनिक विकासक्रम के उन प्रमुख रचनाकारों में हैं जिन्होंने साहित्य को परंपरागत काव्य-संवेदना से आगे ले जाकर आधुनिक मनुष्य के संघर्ष, आत्मचेतना, सामाजिक विषमता और स्वतंत्र व्यक्तित्व की आकांक्षा से जोड़ा। उनकी काव्य-दृष्टि में भारतीय सांस्कृतिक परंपरा और आधुनिक जीवन-बोध का विशिष्ट समन्वय दिखाई देता है। वे पौराणिक आख्यानों और सांस्कृतिक प्रतीकों को केवल अतीत की स्मृतियों के रूप में ग्रहण नहीं करते, बल्कि उन्हें समकालीन जीवन की समस्याओं और मनुष्य की आंतरिक चेतना से जोड़कर नए अर्थ प्रदान करते हैं। इसी रचनात्मक दृष्टि का अत्यंत प्रभावशाली उदाहरण उनकी प्रसिद्ध लंबी कविता *राम की शक्ति पूजा* है। *राम की शक्ति पूजा* हिंदी कविता में मिथक के आधुनिक पुनर्पाठ की एक महत्वपूर्ण रचना है। रामकथा भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में अत्यंत व्यापक और बहुस्तरीय आख्यान रही है। राम को सामान्यतः धर्म, मर्यादा, सत्य और आदर्श के प्रतीक के रूप में देखा गया है। किंतु निराला इस स्थापित छवि को ज्यों का त्यों स्वीकार नहीं करते। वे राम को एक ऐसे संघर्षशील व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत करते हैं जो युद्ध की कठिन परिस्थिति में संशय, निराशा और आत्मसंघर्ष से गुजरता है। इस प्रकार कविता में राम का चरित्र दैवी पूर्णता से अधिक मानवीय संघर्ष और आत्मबल की प्रक्रिया से निर्मित होता है। कविता का केंद्रीय प्रसंग राम और रावण के बीच युद्ध से संबंधित है, किंतु इसका वास्तविक वैचारिक केंद्र बाहरी युद्ध से अधिक राम का आंतरिक संघर्ष है। युद्ध की परिस्थिति में राम के सामने केवल शत्रु को पराजित करने की चुनौती नहीं है; उन्हें अपनी मानसिक दुर्बलता, निराशा और असफलता की आशंका से भी संघर्ष करना पड़ता है। इसी संदर्भ में शक्ति की आराधना कविता में निर्णायक महत्व प्राप्त करती है। शक्ति यहाँ केवल किसी देवी की पूजा का धार्मिक प्रसंग नहीं रह जाती, बल्कि आत्मबल और संकल्प की पुनर्प्राप्ति का प्रतीक बन जाती है।

कविता की रचना-भूमि को बीसवीं शताब्दी के आरंभिक दशकों के भारतीय सामाजिक और राजनीतिक वातावरण से अलग करके नहीं देखा जा सकता। औपनिवेशिक शासन, स्वतंत्रता आंदोलन, सामाजिक सुधार, राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक पुनर्विचार ने उस समय भारतीय साहित्यिक चेतना को गहराई से प्रभावित किया। साहित्यकारों के सामने एक ओर भारतीय परंपरा और सांस्कृतिक विरासत को समझने का प्रश्न था, तो दूसरी ओर आधुनिकता, स्वतंत्रता और सामाजिक परिवर्तन की नई आकांक्षाएँ थीं। इस संक्रमणशील वातावरण में पौराणिक आख्यानों का पुनर्पाठ साहित्य में एक महत्वपूर्ण रचनात्मक रणनीति बना। निराला भी इसी व्यापक सांस्कृतिक प्रक्रिया के भीतर भारतीय मिथकों को आधुनिक अर्थ प्रदान करते हैं। इस संदर्भ में 'नवजागरण' की अवधारणा विशेष महत्व रखती है। हिंदी साहित्य में नवजागरण केवल पश्चिमी आधुनिकता की स्वीकृति का नाम नहीं है, बल्कि इसमें सामाजिक चेतना, तर्कशीलता, आत्मसम्मान, रूढ़ियों के प्रति प्रश्नाकुलता और नए मनुष्य की खोज जैसी अनेक प्रवृत्तियाँ सम्मिलित हैं। निराला की रचनात्मकता में यह चेतना व्यक्ति की स्वतंत्रता और आत्मसम्मान से लेकर सामाजिक असमानता तथा रूढ़ सामाजिक संरचनाओं के प्रति असहमति तक दिखाई देती है। *राम की शक्ति पूजा* में भी शक्ति की खोज को इसी व्यापक आत्मजागरण के संदर्भ में देखा जा सकता है। निराला के यहाँ भारतीय परंपरा और आधुनिकता का संबंध विरोध का नहीं, बल्कि **रचनात्मक पुनर्संवाद** का है। वे पौराणिक चरित्रों को आधुनिक प्रश्नों से जोड़ते हैं और परंपरा के भीतर छिपी उन संभावनाओं को सामने लाते हैं जो वर्तमान मनुष्य के अनुभव को अर्थ प्रदान कर सकती हैं। *राम की शक्ति पूजा* में राम का संघर्ष इसी पुनर्संवाद का परिणाम है। राम परंपरा के आदर्श नायक होते हुए भी यहाँ एक ऐसे मनुष्य के रूप में दिखाई देते हैं जिसे अपनी शक्ति को पहचानने और पुनः अर्जित करने की आवश्यकता पड़ती है।

कविता में **शक्ति और पुरुषार्थ** का संबंध भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। परंपरागत धार्मिक संदर्भ में शक्ति को देवी के रूप में प्रतिष्ठित किया जाता है, किंतु निराला शक्ति को व्यक्ति की आंतरिक क्षमता और संघर्षशील चेतना से भी जोड़ते हैं। राम की शक्ति-आराधना का अर्थ केवल बाहरी दैवी सहायता की अपेक्षा नहीं है। यह उस आत्मिक प्रक्रिया का संकेत है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपनी सीमाओं को पहचानता है, आत्मसंशय से गुजरता है और पुनः संघर्ष के लिए तैयार होता है। इस प्रकार शक्ति की अवधारणा कविता में आध्यात्मिक और मानवीय दोनों स्तरों पर सक्रिय रहती है। कविता की एक महत्वपूर्ण विशेषता **राम का मानवीकरण** है। यहाँ राम सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान देवता के रूप में उपस्थित नहीं हैं। वे चिंतित होते हैं, निराश होते हैं, असफलता की संभावना से प्रभावित होते हैं और अपने भीतर शक्ति की तलाश करते हैं। यह मानवीकरण कविता को आधुनिक मनुष्य के अनुभव से जोड़ता है। आधुनिक व्यक्ति भी सामाजिक, राजनीतिक और व्यक्तिगत संघर्षों के बीच कई बार संशय और असफलता का अनुभव करता है। इस दृष्टि से राम का संघर्ष एक सार्वभौमिक मानवीय संघर्ष का रूप ग्रहण करता है। *राम की शक्ति पूजा* में प्रकृति, युद्ध, अंधकार, प्रकाश, स्मृति और शक्ति जैसे अनेक प्रतीक भी कविता के वैचारिक संसार को निर्मित करते हैं। विशेष रूप से अंधकार और प्रकाश का विरोध संघर्ष और जागरण के व्यापक अर्थ को व्यक्त करता है। युद्ध का बाहरी दृश्य धीरे-धीरे एक आंतरिक मानसिक और आध्यात्मिक संघर्ष में परिवर्तित होता है। इस कारण कविता का अर्थ केवल राम-रावण युद्ध तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह मनुष्य की उस यात्रा का प्रतीक बन जाता है जिसमें वह निराशा से संकल्प और दुर्बलता से आत्मबल की ओर बढ़ता है।

इस कविता का महत्व इसी बात में है कि निराला मिथक को स्थिर अर्थों में स्वीकार नहीं करते। वे रामकथा को पुनर्सृजित करते हुए उसके भीतर आधुनिक मनुष्य की समस्याओं और आकांक्षाओं को स्थापित करते हैं। इस प्रक्रिया में पौराणिक पात्र समकालीन जीवन के प्रतीक बन जाते हैं और अतीत वर्तमान से संवाद करने लगता है। इसलिए *राम की शक्ति पूजा* को केवल धार्मिक या पौराणिक कविता के रूप में पढ़ना उसके वैचारिक विस्तार को सीमित कर देगा। इसे आधुनिकता, आत्मचेतना, संघर्ष और सामाजिक-सांस्कृतिक जागरण के संदर्भ में पढ़ना अधिक सार्थक है। प्रस्तुत शोध इसी दृष्टि से *राम की शक्ति पूजा* में 'शक्ति' की अवधारणा और निराला के 'नवजागरण बोध' के अंतर्संबंध का विश्लेषण करता है। अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि निराला शक्ति को किस प्रकार धार्मिक प्रतीक से आगे बढ़ाकर आत्मबल, आत्मजागरण और परिवर्तनकारी चेतना के रूप में रूपांतरित करते हैं तथा राम के मानवीकरण के माध्यम से आधुनिक मनुष्य की संघर्षशीलता को किस प्रकार अभिव्यक्त करते हैं। साथ ही यह भी देखा जाएगा कि भारतीय मिथकीय परंपरा का यह पुनर्पाठ परंपरा और आधुनिकता के बीच किस प्रकार एक वैचारिक संवाद स्थापित करता है। इस प्रकार *राम की शक्ति पूजा* निराला की काव्य-दृष्टि में उस बिंदु का प्रतिनिधित्व करती है जहाँ **मिथक आधुनिक चेतना से जुड़ता है, शक्ति आत्मबल में रूपांतरित होती है और राम का संघर्ष व्यापक मानवीय जागरण का प्रतीक बन जाता है।** इसी आधार पर कविता में शक्ति की अवधारणा और निराला के नवजागरण-बोध का अध्ययन हिंदी आधुनिकता की साहित्यिक अभिव्यक्ति को समझने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बनता है।

2. 'राम की शक्ति पूजा' में शक्ति की अवधारणा

राम की शक्ति पूजा का केंद्रीय वैचारिक तत्व 'शक्ति' है। निराला ने शक्ति को केवल देवी-आराधना अथवा धार्मिक अनुष्ठान के सीमित अर्थ में ग्रहण नहीं किया, बल्कि उसे मनुष्य की आंतरिक ऊर्जा, आत्मबल, संकल्प और संघर्षशील चेतना के व्यापक प्रतीक के रूप में रूपांतरित किया है। कविता में राम की शक्ति-पूजा का प्रसंग इसी वैचारिक विस्तार को स्पष्ट करता है। राम के सामने उपस्थित बाहरी संकट धीरे-धीरे आंतरिक संकट में परिवर्तित

होता है और इस संकट से मुक्ति के लिए उन्हें जिस शक्ति की आवश्यकता होती है, वह अंततः आत्मविश्वास और संकल्प की पुनर्प्राप्ति से जुड़ जाती है। भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में 'शक्ति' की अवधारणा अत्यंत व्यापक है। शक्ति को सृष्टि, ऊर्जा, गति और परिवर्तन की मूल सत्ता के रूप में देखा गया है। देवी-परंपरा में शक्ति स्त्री-तत्त्व का प्रतिनिधित्व करती है और उसे ऐसी ऊर्जा माना जाता है जिसके बिना पुरुष-तत्त्व भी सक्रिय नहीं हो सकता। निराला इसी सांस्कृतिक परंपरा को ग्रहण करते हुए उसे आधुनिक मनुष्य की चेतना से जोड़ते हैं। उनके यहाँ शक्ति किसी निष्क्रिय या दूरस्थ दैवी सत्ता का नाम नहीं है; वह सक्रियता, संघर्ष और परिवर्तन की ऊर्जा है।

कविता के आरंभिक वातावरण में ही संघर्ष और संकट की स्थिति निर्मित होती है। राम रावण के विरुद्ध युद्ध कर रहे हैं, किंतु परिस्थितियाँ उनके अनुकूल नहीं हैं। बाहरी पराजय की संभावना उनके भीतर मानसिक अस्थिरता उत्पन्न करती है। इस स्थिति में शक्ति की आवश्यकता केवल युद्ध जीतने के लिए नहीं, बल्कि स्वयं को मानसिक रूप से पुनर्संगठित करने के लिए भी है। इस प्रकार शक्ति की अवधारणा बाहरी विजय से पहले **आंतरिक विजय** से जुड़ती है। निराला की दृष्टि में शक्ति का सबसे महत्वपूर्ण रूप **आत्मबल** है। मनुष्य के सामने कठिन परिस्थितियाँ तब अधिक प्रभावशाली हो जाती हैं जब उसका आत्मविश्वास कमजोर पड़ता है। राम की स्थिति इसी मानसिक संघर्ष को व्यक्त करती है। वे युद्ध की कठिनाइयों और संभावित पराजय से प्रभावित होते हैं, लेकिन शक्ति-आराधना के माध्यम से उनका चेतन संसार पुनर्गठित होता है। इसलिए शक्ति-पूजा को आत्मबल की पुनर्प्राप्ति की प्रक्रिया के रूप में पढ़ा जा सकता है।

शक्ति और **संकल्प** का संबंध भी कविता में अत्यंत महत्वपूर्ण है। शक्ति तभी सार्थक होती है जब वह किसी उद्देश्यपूर्ण कर्म में परिवर्तित हो। राम की पूजा निष्क्रिय प्रार्थना नहीं है। उसके पीछे संघर्ष में लौटने और अपने लक्ष्य को प्राप्त करने का संकल्प है। इस प्रकार निराला शक्ति को कर्म से जोड़ते हैं। शक्ति का वास्तविक अर्थ तभी प्रकट होता है जब वह व्यक्ति को निष्क्रियता से सक्रियता, निराशा से संकल्प और संशय से निर्णय की ओर ले जाती है।

इसी संदर्भ में **आत्मसमर्पण और आत्मजागरण** के बीच का संबंध महत्वपूर्ण हो जाता है। पहली दृष्टि में शक्ति की आराधना व्यक्ति के स्वयं को किसी उच्चतर सत्ता के समक्ष समर्पित करने की प्रक्रिया दिखाई देती है, किंतु कविता के भीतर यह समर्पण व्यक्ति की आत्मशक्ति को नष्ट नहीं करता। इसके विपरीत, यह उसे अपनी आंतरिक क्षमता पहचानने की दिशा में ले जाता है। इसलिए यहाँ आत्मसमर्पण को निष्क्रिय निर्भरता के रूप में नहीं, बल्कि आत्मबोध की प्रक्रिया के रूप में समझा जा सकता है। कविता में शक्ति का **स्त्री-तत्त्व** भी विशेष महत्व रखता है। राम जैसे पुरुष नायक को शक्ति की आवश्यकता होना पितृसत्तात्मक शक्ति-धारणा के पारंपरिक ढाँचे को चुनौती देता है। यहाँ शक्ति किसी पुरुष नायक के अधीन रहने वाली सत्ता नहीं है; राम स्वयं उसके समक्ष विनम्र होते हैं। इस प्रकार देवी की आराधना के माध्यम से निराला शक्ति के स्त्री-रूप को केंद्रीय वैचारिक स्थान प्रदान करते हैं। इससे कविता में शक्ति का अर्थ अधिक व्यापक और संतुलित बनता है।

शक्ति का यह स्त्री-रूप केवल धार्मिक प्रतीक नहीं रहता, बल्कि **सृजन और परिवर्तन की ऊर्जा** का प्रतिनिधित्व करता है। विनाशकारी संघर्ष के बीच शक्ति जीवन और परिवर्तन की संभावना को बनाए रखती है। रावण के विरुद्ध युद्ध केवल बाहरी शत्रु से संघर्ष नहीं है; यह अन्याय, अहंकार और अधर्म के विरुद्ध संघर्ष का प्रतीकात्मक रूप भी ग्रहण करता है। इस दृष्टि से शक्ति नैतिक परिवर्तन की ऊर्जा के रूप में सामने आती है।

कविता में शक्ति की अवधारणा को **प्रकृति और जीवन-ऊर्जा** के संदर्भ में भी समझा जा सकता है। निराला की काव्य-दृष्टि में प्रकृति स्थिर पृष्ठभूमि नहीं, बल्कि संवेदनात्मक और वैचारिक अनुभव का सक्रिय हिस्सा है।

अंधकार, वातावरण और युद्ध की तनावपूर्ण स्थिति राम की मानसिक अवस्था के साथ जुड़ती है। शक्ति की प्राप्ति के साथ चेतना में जो परिवर्तन आता है, वह बाहरी और आंतरिक दोनों स्तरों पर एक प्रकार के प्रकाश और ऊर्जा का संकेत देता है। इस प्रकार शक्ति अंधकार से प्रकाश की ओर जाने वाली प्रक्रिया का प्रतीक बनती है। शक्ति का एक और महत्वपूर्ण आयाम **नैतिक शक्ति** है। केवल शारीरिक सामर्थ्य या युद्ध-कौशल किसी संघर्ष की अंतिम सफलता सुनिश्चित नहीं करता। व्यक्ति के भीतर उद्देश्य की स्पष्टता, आत्मसंयम, धैर्य और न्याय के प्रति प्रतिबद्धता भी आवश्यक है। राम की शक्ति-आराधना इसी नैतिक शक्ति को सक्रिय करती है। इस अर्थ में शक्ति बाहरी विजय की साधन मात्र नहीं, बल्कि उस विजय को नैतिक अर्थ प्रदान करने वाली चेतना भी है।

निराला शक्ति को **व्यक्तिगत से सामूहिक स्तर** तक विस्तृत करते हैं। राम की व्यक्तिगत शक्ति का जागरण केवल उनका निजी अनुभव नहीं रह जाता। राम जिस संघर्ष का प्रतिनिधित्व करते हैं, वह व्यापक स्तर पर अन्याय और अधर्म के विरुद्ध संघर्ष का रूप ग्रहण करता है। इसलिए व्यक्ति की आत्मशक्ति अंततः सामाजिक और सामूहिक शक्ति से जुड़ सकती है। यही वह बिंदु है जहाँ शक्ति की अवधारणा नवजागरण-बोध से जुड़ने लगती है। इस दृष्टि से कविता का शक्ति-विमर्श आधुनिक मनुष्य के लिए भी प्रासंगिक बनता है। आधुनिक जीवन में व्यक्ति अनेक प्रकार के संकटों, असफलताओं और सामाजिक दबावों का सामना करता है। ऐसे समय में शक्ति का अर्थ किसी चमत्कारी बाहरी सहायता से अधिक अपने भीतर संघर्ष करने की क्षमता को पहचानना हो सकता है। निराला का राम इसी अर्थ में आधुनिक मनुष्य का प्रतीक बन जाता है—वह संकट से टूटता है, आत्मसंशय से गुजरता है, लेकिन अंततः अपनी चेतना को पुनर्संगठित करके संघर्ष के लिए तैयार होता है।

यहाँ **शक्ति और स्वतंत्रता** का संबंध भी महत्वपूर्ण है। वास्तविक शक्ति वह है जो व्यक्ति को भय और निष्क्रियता से मुक्त करती है। राम की शक्ति-प्राप्ति उन्हें केवल युद्ध में सक्षम नहीं बनाती, बल्कि निर्णय लेने और अपने लक्ष्य के प्रति दृढ़ रहने की क्षमता प्रदान करती है। इसलिए शक्ति को स्वतंत्र चेतना के आधार के रूप में भी समझा जा सकता है।

अतः *राम की शक्ति पूजा* में शक्ति की अवधारणा बहुस्तरीय है। वह देवी है, ऊर्जा है, आत्मबल है, संकल्प है, नैतिक चेतना है और परिवर्तन की क्षमता भी है। निराला शक्ति को बाहरी दैवी सत्ता से जोड़ते हुए भी उसे मनुष्य की आंतरिक चेतना में सक्रिय करते हैं। इसी कारण कविता में शक्ति-पूजा केवल धार्मिक प्रसंग नहीं रह जाती, बल्कि **आत्मजागरण और संघर्ष के माध्यम से मनुष्य के पुनर्निर्माण की प्रक्रिया** बन जाती है। इस प्रकार 'शक्ति' *राम की शक्ति पूजा* का केवल विषय नहीं, बल्कि उसकी केंद्रीय वैचारिक संरचना है। शक्ति के माध्यम से निराला परंपरा को आधुनिक संदर्भ प्रदान करते हैं और राम के संघर्ष को व्यापक मानवीय संघर्ष से जोड़ते हैं। आगे राम के चरित्र का अध्ययन इसी आधार पर यह स्पष्ट करेगा कि निराला ने किस प्रकार पारंपरिक देवता को संघर्षशील और आत्मसंघर्षरत मनुष्य के रूप में पुनर्सृजित किया है।

3. राम का पुनर्पाठ: देवता से संघर्षशील मनुष्य तक

राम की शक्ति पूजा की सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में राम के चरित्र का मानवीकरण है। भारतीय साहित्यिक और धार्मिक परंपरा में राम को सामान्यतः मर्यादा, धर्म, सत्य और आदर्श के प्रतीक के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। उनके चरित्र में नैतिक दृढ़ता और आदर्श पुरुषत्व को प्रमुखता दी जाती रही है। निराला इस स्थापित छवि को अस्वीकार नहीं करते, किंतु उसमें एक महत्वपूर्ण मानवीय आयाम जोड़ते हैं। उनके राम संघर्ष करते हैं, चिंतित होते हैं, आत्मसंशय से गुजरते हैं और अपनी शक्ति को पुनः प्राप्त करने के लिए आत्ममंथन करते हैं। इस प्रकार राम का चरित्र दैवी पूर्णता से आगे बढ़कर आधुनिक मनुष्य के संघर्ष का प्रतिनिधि बन जाता है।

कविता में राम की स्थिति आरंभ से ही सहज विजय की नहीं है। युद्ध का वातावरण तनावपूर्ण है और रावण की शक्ति उन्हें गंभीर चुनौती देती है। युद्ध में अपेक्षित सफलता न मिलना राम के भीतर निराशा और चिंता उत्पन्न करता है। यहाँ निराला राम को ऐसे नायक के रूप में प्रस्तुत करते हैं जो परिस्थितियों से अप्रभावित नहीं रहता। यह मानवीय दुर्बलता उनके चरित्र को कमजोर नहीं करती, बल्कि उसे अधिक विश्वसनीय और आधुनिक बनाती है। परंपरागत राम की सबसे बड़ी विशेषता उनकी **धर्मनिष्ठ दृढ़ता** मानी जाती है, जबकि निराला के राम की विशिष्टता यह है कि उनकी दृढ़ता संघर्ष के भीतर निर्मित होती है। वे आरंभ से ही पूर्ण आत्मविश्वास की स्थिति में नहीं हैं। उन्हें अपनी मानसिक स्थिति से संघर्ष करना पड़ता है। इस प्रकार निराला के यहाँ नायकत्व किसी पूर्वनिर्धारित दैवी गुण का परिणाम नहीं, बल्कि आत्मसंघर्ष और आत्मजागरण से विकसित होने वाली चेतना है।

राम का यह आत्मसंघर्ष कविता को गहरा **मनोवैज्ञानिक आयाम** प्रदान करता है। बाहरी युद्ध के साथ-साथ राम के भीतर भी एक युद्ध चल रहा है। एक ओर विजय का उद्देश्य है और दूसरी ओर परिस्थितियों से उत्पन्न निराशा। एक ओर कर्तव्य का बोध है और दूसरी ओर क्षणिक आत्मसंशय। इन दोनों के बीच चलने वाला संघर्ष राम के व्यक्तित्व को गतिशील बनाता है। इस दृष्टि से रावण केवल बाहरी शत्रु नहीं, बल्कि उन मानसिक बाधाओं का भी प्रतीक बन जाता है जिन्हें पार करना आवश्यक है। राम के चरित्र में **असफलता का अनुभव** विशेष महत्व रखता है। पारंपरिक आदर्श नायक की छवि में असफलता के लिए अपेक्षाकृत कम स्थान होता है, किंतु निराला असफलता को नायकत्व की प्रक्रिया का हिस्सा बनाते हैं। राम का संघर्ष यह संकेत देता है कि महान उद्देश्य की प्राप्ति के मार्ग में असफलता और निराशा स्वाभाविक हो सकती है। महत्वपूर्ण यह है कि व्यक्ति उन परिस्थितियों से किस प्रकार उबरता है। इस अर्थ में निराला की दृष्टि में नायकत्व विजय से अधिक संघर्ष करने की क्षमता में निहित है। इसी बिंदु पर **शक्ति की आवश्यकता** राम के मानवीकरण को और स्पष्ट करती है। यदि राम पूर्णतः सर्वशक्तिमान देवता होते, तो शक्ति की आराधना की आवश्यकता का प्रश्न ही नहीं उठता। लेकिन निराला उन्हें ऐसी स्थिति में रखते हैं जहाँ उन्हें स्वयं से बड़ी शक्ति के सामने विनम्र होना पड़ता है। यह विनम्रता उनकी कमजोरी नहीं, बल्कि आत्मबोध का संकेत है। वे अपनी सीमाओं को स्वीकार करते हैं और इसी स्वीकार से आगे बढ़ने की ऊर्जा प्राप्त करते हैं। राम का शक्ति के सामने झुकना पारंपरिक **पुरुष-नायकत्व की पुनर्व्याख्या** भी करता है। यहाँ शक्ति का स्रोत केवल पुरुष की शारीरिक या राजनीतिक क्षमता नहीं है। राम को देवी-शक्ति की आराधना करनी पड़ती है। इस प्रकार निराला शक्ति के स्त्री-रूप को केंद्रीय स्थान देकर यह संकेत देते हैं कि वास्तविक सामर्थ्य किसी एक लिंग या सत्ता की संपत्ति नहीं है। शक्ति का स्रोत व्यापक और जीवनदायी है, और पुरुष नायक भी उसके बिना पूर्ण नहीं हो सकता। राम के मानवीकरण का एक महत्वपूर्ण पक्ष **आत्मावलोकन** है। संकट की स्थिति उन्हें अपने भीतर देखने के लिए बाध्य करती है। यह आत्मावलोकन आधुनिक व्यक्ति की आत्मचेतना से जुड़ा है। आधुनिक मनुष्य बाहरी परिस्थितियों को बदलने के साथ-साथ अपने भीतर की सीमाओं और कमजोरियों को पहचानने के लिए भी बाध्य होता है। निराला का राम इसी आधुनिक आत्मचेतना का साहित्यिक रूप प्रस्तुत करता है।

इस प्रक्रिया में राम की **आस्था** भी एक नए अर्थ में सामने आती है। उनकी शक्ति-पूजा अंधविश्वास का परिणाम नहीं है। पूजा के माध्यम से वे अपने भीतर उस ऊर्जा को पुनर्स्थापित करते हैं जो संघर्ष के लिए आवश्यक है। इस प्रकार धार्मिक प्रतीक आधुनिक मनोवैज्ञानिक अनुभव से जुड़ जाता है। आस्था और आत्मबल एक-दूसरे के विरोधी नहीं रहते; बल्कि आस्था आत्मबल को सक्रिय करने वाली प्रक्रिया बन जाती है।

राम का चरित्र यहाँ **व्यक्ति और कर्तव्य** के संबंध को भी स्पष्ट करता है। व्यक्तिगत निराशा के बावजूद राम अपने कर्तव्य से विमुख नहीं होते। उनकी आत्मपीड़ा उन्हें संघर्ष से पूरी तरह अलग नहीं करती। इसके विपरीत,

आत्ममंथन के बाद उनका संकल्प अधिक दृढ़ होता है। इससे यह विचार उभरता है कि सच्ची शक्ति व्यक्तिगत भावनाओं का दमन नहीं, बल्कि उन्हें समझकर उन्हें उद्देश्यपूर्ण कर्म में परिवर्तित करने की क्षमता है।

निराला के राम इसलिए केवल धार्मिक आदर्श नहीं हैं; वे **संघर्षशील आधुनिक मनुष्य** के प्रतिनिधि हैं। उनका संकट किसी एक व्यक्ति का संकट नहीं है। असफलता, संशय, आत्मविश्वास की कमी और फिर पुनः संघर्ष के लिए तैयार होना मनुष्य के सार्वभौमिक अनुभव हैं। राम का मानवीकरण इस अनुभव को मिथकीय ऊँचाई प्रदान करता है और मिथक को वर्तमान जीवन के निकट ले आता है। यहाँ निराला की **आधुनिक काव्य-दृष्टि** विशेष रूप से दिखाई देती है। वे परंपरा को नष्ट नहीं करते, बल्कि उसके भीतर नए अर्थों की खोज करते हैं। रामकथा का मूल सांस्कृतिक ढाँचा बना रहता है, लेकिन उसके भीतर मनुष्य की आंतरिक चेतना को केंद्रीय स्थान मिल जाता है। इस प्रकार परंपरा आधुनिक प्रश्नों के साथ संवाद करती है। राम का संघर्ष आधुनिक मनुष्य के संघर्ष से जुड़ता है और शक्ति-पूजा आत्मजागरण की प्रक्रिया बन जाती है। राम के मानवीकरण का एक व्यापक सामाजिक अर्थ भी है। यदि राम जैसी आदर्श सत्ता भी संघर्ष, संशय और आत्ममंथन से गुजरती है, तो सामान्य मनुष्य की कमजोरियाँ उसे हीन नहीं बनातीं। महत्वपूर्ण यह है कि वह अपनी सीमाओं को पहचानकर उन्हें पार करने की क्षमता विकसित करे। इस प्रकार निराला का राम निराशा में डूबे मनुष्य को संघर्ष और आत्मबल की ओर प्रेरित करने वाला प्रतीक बनता है। अंततः *राम की शक्ति पूजा* में राम का पुनर्पाठ परंपरा और आधुनिकता के बीच एक महत्वपूर्ण सेतु स्थापित करता है। राम यहाँ केवल पूजनीय देवता नहीं, बल्कि संघर्ष करने वाला मनुष्य हैं; वे केवल विजय के प्रतीक नहीं, बल्कि असफलता से उबरने की प्रक्रिया के प्रतीक हैं; और वे केवल बाहरी शक्ति के धारक नहीं, बल्कि आत्मशक्ति की खोज करने वाले व्यक्तित्व हैं। इसी मानवीकरण के कारण उनकी शक्ति-पूजा व्यक्तिगत आत्मजागरण से आगे बढ़कर व्यापक नवजागरण की संभावना से जुड़ती है।

इस प्रकार निराला का राम **देवत्व से मनुष्यता और मनुष्यता से आत्मशक्ति की ओर जाने वाली चेतना** का प्रतिनिधित्व करता है। यही पुनर्पाठ *राम की शक्ति पूजा* को पारंपरिक रामकथा से अलग करते हुए आधुनिक हिंदी कविता की एक महत्वपूर्ण वैचारिक रचना बनाता है।

4. शक्ति, संघर्ष और आत्मजागरण

राम की शक्ति पूजा में शक्ति की अवधारणा और राम का संघर्ष एक-दूसरे से अविभाज्य हैं। कविता का बाहरी कथानक राम और रावण के युद्ध पर आधारित है, किंतु उसका वास्तविक वैचारिक तनाव राम के भीतर घटित होने वाले संघर्ष में निहित है। युद्ध की प्रतिकूल परिस्थितियाँ राम के आत्मविश्वास को प्रभावित करती हैं और उन्हें अपनी शक्ति, उद्देश्य तथा संघर्ष की दिशा पर पुनर्विचार करने के लिए बाध्य करती हैं। इस प्रकार बाहरी युद्ध धीरे-धीरे आंतरिक युद्ध का रूप ग्रहण करता है और शक्ति की खोज आत्मजागरण की प्रक्रिया में परिवर्तित हो जाती है। राम की प्रारंभिक स्थिति में **संघर्ष और संशय** दोनों उपस्थित हैं। रावण की शक्ति और युद्ध की कठिन परिस्थितियाँ उनके भीतर निराशा उत्पन्न करती हैं। यह निराशा केवल तत्कालीन युद्ध-परिस्थिति की प्रतिक्रिया नहीं है, बल्कि उस क्षण का प्रतिनिधित्व करती है जब कोई व्यक्ति अपने उद्देश्य की कठिनाई और अपनी सीमाओं को एक साथ अनुभव करता है। निराला इस मनःस्थिति को महत्व देते हैं, क्योंकि इसी से आत्मजागरण की प्रक्रिया प्रारंभ होती है। यदि संघर्ष न हो, तो आत्मशक्ति की आवश्यकता और उसकी पहचान भी सामने नहीं आती। इस दृष्टि से **पराजय-बोध** कविता में निर्णायक भूमिका निभाता है। पराजय का अनुभव व्यक्ति को दो दिशाओं में ले जा सकता है—या तो वह निष्क्रिय होकर परिस्थितियों के सामने आत्मसमर्पण कर दे, या अपनी कमजोरियों को पहचानकर नए संकल्प के साथ संघर्ष करे। निराला के राम दूसरी दिशा का चयन

करते हैं। उनका पराजय-बोध अंततः आत्मबल के पुनर्निर्माण का कारण बनता है। इस प्रकार कविता में पराजय अंतिम स्थिति नहीं, बल्कि आत्मजागरण का प्रारंभिक बिंदु है।

शक्ति-पूजा इसी प्रक्रिया में **आत्मावलोकन का माध्यम** बनती है। राम बाहरी विजय के लिए शक्ति की कामना करते हुए अपने भीतर की स्थिति से भी परिचित होते हैं। पूजा का अर्थ इसलिए केवल देवी को प्रसन्न करना नहीं है; यह स्वयं को संघर्ष के योग्य बनाने की प्रक्रिया भी है। राम की चेतना में जो परिवर्तन आता है, वह बाहरी सहायता से अधिक आंतरिक दृढ़ता से संबंधित है। इस प्रकार धार्मिक कर्मकांड एक मनोवैज्ञानिक और वैचारिक अनुभव में रूपांतरित हो जाता है।

शक्ति और आत्मजागरण के संबंध को समझने के लिए **आत्मसंयम** का तत्व भी महत्वपूर्ण है। संघर्ष की स्थिति में व्यक्ति का मन भय, क्रोध और निराशा से प्रभावित हो सकता है। शक्ति का अर्थ इन भावनाओं को समाप्त करना नहीं, बल्कि उन्हें नियंत्रित करके उद्देश्यपूर्ण कर्म में बदलना है। राम का आत्ममंथन उन्हें भावनात्मक अस्थिरता से संकल्प की ओर ले जाता है। इस प्रक्रिया में आत्मसंयम शक्ति का आवश्यक आधार बनता है।

कविता में शक्ति का संबंध **कर्म और संकल्प** से भी स्थापित होता है। शक्ति यदि केवल आंतरिक अनुभव बनकर रह जाए और कर्म में परिवर्तित न हो, तो उसका सामाजिक अर्थ सीमित हो जाता है। राम की शक्ति-प्राप्ति का अंतिम उद्देश्य पुनः युद्ध में प्रवेश करना है। इसलिए शक्ति निष्क्रिय आध्यात्मिकता नहीं, बल्कि सक्रिय कर्म की ऊर्जा है। निराला के यहाँ आत्मजागरण का अंतिम परिणाम जीवन और संघर्ष में सक्रिय भागीदारी है। इसी संदर्भ में **आत्मसमर्पण और आत्मनिर्भरता** के बीच का संबंध विशेष ध्यान देने योग्य है। राम शक्ति के समक्ष स्वयं को समर्पित करते हैं, लेकिन यह समर्पण उन्हें निष्क्रिय नहीं बनाता। इसके विपरीत, इससे उनकी आत्मनिर्भरता और संकल्प मजबूत होते हैं। यहाँ बाहरी शक्ति और आंतरिक शक्ति के बीच विरोध नहीं, बल्कि एक प्रकार का संवाद है। व्यक्ति किसी उच्चतर नैतिक या आध्यात्मिक सत्ता से प्रेरणा ग्रहण करते हुए अपने भीतर की क्षमता को सक्रिय करता है। शक्ति-आराधना का एक महत्वपूर्ण पक्ष **आत्मविश्वास की पुनर्प्राप्ति** है। संकट की स्थिति में व्यक्ति की सबसे बड़ी कमजोरी कई बार बाहरी शत्रु नहीं, बल्कि अपनी क्षमता के प्रति उसका संदेह होता है। राम का संघर्ष इसी मनोवैज्ञानिक स्थिति को सामने लाता है। शक्ति की साधना के बाद उनका संकल्प पुनः दृढ़ होता है। इसलिए शक्ति का वास्तविक प्रभाव मानसिक स्तर पर दिखाई देता है—वह व्यक्ति को स्वयं पर विश्वास करने और संघर्ष को जारी रखने की क्षमता प्रदान करती है।

इस प्रक्रिया को **अंधकार से प्रकाश की यात्रा** के प्रतीकात्मक ढाँचे में भी समझा जा सकता है। युद्ध की प्रतिकूलता, निराशा और संशय एक प्रकार के मानसिक अंधकार का निर्माण करते हैं। इसके विपरीत शक्ति की अनुभूति चेतना में प्रकाश, दिशा और संकल्प का संचार करती है। इस प्रकार कविता में प्रकाश केवल प्राकृतिक या दृश्य तत्व नहीं, बल्कि जाग्रत चेतना का प्रतीक बन जाता है। अंधकार और प्रकाश का द्वंद्व व्यक्ति की आंतरिक स्थिति को भी व्यक्त करता है। राम का आत्मजागरण केवल व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं है। उनका संघर्ष जिस नैतिक उद्देश्य से जुड़ा है, वह उसे **सामूहिक अर्थ** प्रदान करता है। अन्याय और अधर्म के विरुद्ध संघर्ष तभी सफल हो सकता है जब व्यक्ति के भीतर व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठकर व्यापक उद्देश्य के प्रति प्रतिबद्धता विकसित हो। राम की शक्ति इसी व्यापक उद्देश्य से जुड़ती है। इस प्रकार व्यक्तिगत आत्मबल धीरे-धीरे सामाजिक और नैतिक शक्ति में रूपांतरित होता है। यहीं से **राम की शक्ति पूजा** का संबंध **नवजागरण की चेतना** से स्थापित होने लगता है। नवजागरण का मूल तत्व व्यक्ति और समाज की सुप्त चेतना को सक्रिय करना है। निराला के राम पहले स्वयं के भीतर शक्ति की खोज करते हैं और फिर बाहरी संघर्ष के लिए तैयार होते हैं। इस

संरचना में व्यक्तिगत जागरण और सामूहिक जागरण के बीच स्पष्ट संबंध दिखाई देता है। व्यक्ति का आत्मविश्वास सामाजिक परिवर्तन की व्यापक प्रक्रिया का आधार बन सकता है।

इस संदर्भ में राम का संघर्ष आधुनिक मनुष्य की स्थिति से भी जुड़ा है। आधुनिक जीवन में व्यक्ति सामाजिक दबाव, असफलता, अन्याय और अनिश्चितता से संघर्ष करता है। ऐसे समय में बाहरी परिस्थितियों को बदलने के साथ-साथ अपनी आंतरिक शक्ति को पहचानना भी आवश्यक है। निराला का राम इसी आधुनिक मनुष्य की मनःस्थिति का प्रतीक बन जाता है। उसकी कमजोरी उसे समाप्त नहीं करती; बल्कि वही कमजोरी उसे आत्मचिंतन और आत्मजागरण की ओर प्रेरित करती है।

शक्ति और संघर्ष का संबंध इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि शक्ति यहाँ **स्थिर संपत्ति नहीं, अर्जित चेतना** है। व्यक्ति जन्म से शक्तिशाली होने के बावजूद परिस्थितियों में कमजोर पड़ सकता है और फिर अपने अनुभवों से शक्ति को पुनः अर्जित कर सकता है। इस दृष्टि से शक्ति एक गतिशील प्रक्रिया है। वह आत्मसंघर्ष, साधना, संकल्प और कर्म के माध्यम से विकसित होती है। निराला की काव्य-दृष्टि में यही गतिशीलता शक्ति को आधुनिक अर्थ प्रदान करती है।

कविता में यह भी स्पष्ट होता है कि **आत्मजागरण अकेली बौद्धिक प्रक्रिया नहीं है**। इसमें भावनाएँ, आस्था, स्मृति, अनुभव और संकल्प सभी शामिल हैं। राम केवल तर्क के माध्यम से अपनी समस्या का समाधान नहीं करते; वे अपनी संपूर्ण संवेदनात्मक और आध्यात्मिक चेतना को सक्रिय करते हैं। इस प्रकार निराला का आत्मजागरण समग्र मानवीय जागरण है जिसमें मन, बुद्धि और संकल्प का समन्वय होता है।

इस प्रकार *राम की शक्ति पूजा* में शक्ति और संघर्ष का संबंध एक गहरी वैचारिक संरचना निर्मित करता है। **संघर्ष संशय को जन्म देता है, संशय आत्ममंथन को, आत्ममंथन शक्ति-बोध को और शक्ति-बोध पुनः संघर्ष के लिए संकल्प को।** यह चक्र कविता को केवल धार्मिक आख्यान से आगे ले जाकर आधुनिक मनुष्य की आत्मनिर्माण प्रक्रिया का काव्यात्मक रूप प्रदान करता है।

अतः शक्ति-पूजा का अंतिम अर्थ बाहरी विजय प्राप्त करना मात्र नहीं है। उसका वास्तविक अर्थ व्यक्ति के भीतर ऐसी चेतना का निर्माण है जो संकट के सामने टूटे नहीं, अपनी सीमाओं को पहचाने, आत्मबल अर्जित करे और उद्देश्यपूर्ण कर्म के लिए स्वयं को तैयार करे। इसी अर्थ में *राम की शक्ति पूजा* में शक्ति **आत्मजागरण की ऊर्जा और संघर्ष को सार्थक बनाने वाली चेतना** बन जाती है। यही प्रक्रिया आगे निराला के व्यापक नवजागरण-बोध से जुड़ी है, जहाँ व्यक्ति का जागरण सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन की संभावना में रूपांतरित होता है।

5. निराला का नवजागरण बोध : परंपरा और आधुनिकता का संवाद

निराला की साहित्यिक चेतना को समझने के लिए 'नवजागरण' की अवधारणा अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनके साहित्य में नवजागरण केवल अतीत से मुक्ति या पश्चिमी आधुनिकता की स्वीकृति का नाम नहीं है, बल्कि यह भारतीय समाज और संस्कृति के भीतर सक्रिय चेतना, आत्मसम्मान, स्वतंत्र चिंतन और परिवर्तन की आकांक्षा से निर्मित दृष्टि है। निराला परंपरा को अस्वीकार करने के बजाय उसके भीतर निहित जीवनदायी तत्वों की खोज करते हैं और उन्हें आधुनिक परिस्थितियों के संदर्भ में पुनर्परिभाषित करते हैं। *राम की शक्ति पूजा* इसी रचनात्मक प्रक्रिया का महत्वपूर्ण उदाहरण है। भारतीय साहित्यिक परंपरा में राम का चरित्र पहले से ही व्यापक सांस्कृतिक अर्थों से जुड़ा हुआ था। राम धर्म, मर्यादा, न्याय और आदर्श के प्रतीक रहे हैं। निराला इस परंपरा को स्वीकार करते हुए

भी राम को स्थिर और अपरिवर्तनीय आदर्श के रूप में प्रस्तुत नहीं करते। वे राम के भीतर संघर्ष, संशय और आत्ममंथन को स्थान देते हैं। यह परिवर्तन स्वयं में आधुनिक दृष्टि का संकेत है, क्योंकि आधुनिक चेतना व्यक्ति को केवल आदर्श के रूप में नहीं, बल्कि उसकी जटिल मनोवैज्ञानिक और सामाजिक स्थितियों के साथ समझने का प्रयास करती है। इस प्रकार निराला का **मिथकीय पुनर्पाठ** नवजागरण-बोध का महत्वपूर्ण आधार बनता है। वे रामकथा को दोहराते नहीं, बल्कि उसके भीतर से ऐसे अर्थों को सक्रिय करते हैं जो आधुनिक मनुष्य के अनुभव से जुड़ सकें। राम का संकट, शक्ति की खोज और आत्मजागरण अतीत की कथा को वर्तमान की समस्या से जोड़ते हैं। मिथक इस प्रक्रिया में निष्क्रिय परंपरा नहीं रहता; वह आधुनिक प्रश्नों पर विचार करने का माध्यम बन जाता है।

निराला के नवजागरण-बोध में **आत्मचेतना** का विशेष महत्व है। किसी भी सामाजिक या सांस्कृतिक परिवर्तन की शुरुआत व्यक्ति की चेतना से होती है। *राम की शक्ति पूजा* में राम बाहरी संघर्ष से पहले अपने भीतर के संकट का सामना करते हैं। वे अपनी दुर्बलता और सीमाओं को पहचानते हैं तथा शक्ति की खोज करते हैं। यह आत्मावलोकन उस जागरण का प्रतीक है जिसमें व्यक्ति परिस्थितियों को केवल स्वीकार नहीं करता, बल्कि उन्हें बदलने की क्षमता की तलाश करता है। यहाँ **शक्ति** नवजागरण की सक्रिय ऊर्जा बन जाती है। यदि शक्ति को केवल धार्मिक अर्थ में देखा जाए तो कविता की आधुनिक वैचारिक संभावना सीमित हो जाएगी। निराला शक्ति को आत्मबल, संकल्प, नैतिक साहस और परिवर्तनकारी चेतना से जोड़ते हैं। इस अर्थ में शक्ति व्यक्ति को निष्क्रियता से सक्रियता की ओर ले जाती है। नवजागरण भी मूलतः इसी सक्रिय चेतना की प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति और समाज अपने भीतर मौजूद संभावनाओं को पहचानते हैं। निराला के यहाँ परंपरा और आधुनिकता का संबंध **संघर्ष के बजाय संवाद** का है। वे भारतीय मिथकीय और सांस्कृतिक प्रतीकों का प्रयोग करते हुए आधुनिक जीवन की समस्याओं को व्यक्त करते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि आधुनिकता का अर्थ अपनी सांस्कृतिक परंपरा से पूर्ण विच्छेद नहीं है। परंपरा को नए प्रश्नों के साथ पढ़कर उसमें आधुनिक अर्थों की खोज की जा सकती है। *राम की शक्ति पूजा* में रामकथा का पुनर्पाठ इसी प्रकार की आधुनिक सांस्कृतिक दृष्टि को प्रस्तुत करता है।

इस संदर्भ में **रूढ़ि और चेतना** का द्वंद्व महत्वपूर्ण है। कोई भी परंपरा तब रूढ़ि बन जाती है जब उसके अर्थों को बिना प्रश्न किए स्थिर मान लिया जाए। निराला की रचनात्मकता इस स्थिरता को चुनौती देती है। वे परंपरा के भीतर प्रवेश करके उसके चरित्रों और प्रतीकों को नए अर्थ देते हैं। राम को संघर्षशील मनुष्य और शक्ति को आत्मजागरण की ऊर्जा के रूप में प्रस्तुत करना इसी प्रक्रिया का उदाहरण है। इस प्रकार निराला परंपरा को नष्ट नहीं करते, बल्कि उसका आलोचनात्मक पुनर्मूल्यांकन करते हैं। नवजागरण-बोध का एक महत्वपूर्ण पक्ष **व्यक्ति की स्वतंत्रता** है। निराला के साहित्य में व्यक्ति की स्वतंत्र चेतना और आत्मसम्मान को विशेष महत्व मिलता है। *राम की शक्ति पूजा* में भी राम बाहरी परिस्थितियों के निष्क्रिय पात्र नहीं हैं। वे अपने संकट का सामना करते हैं, आत्ममंथन करते हैं और पुनः निर्णय लेते हैं। इस प्रकार व्यक्ति अपने भाग्य या परिस्थितियों का मात्र परिणाम नहीं रहता; वह अपने कर्म और चेतना के माध्यम से परिवर्तन की संभावना निर्मित करता है।

निराला की आधुनिक दृष्टि **मानवीय गरिमा** से भी जुड़ी है। राम का मानवीकरण उन्हें अधिक मानवीय बनाता है और उनकी कमजोरी को उनकी गरिमा के विरुद्ध नहीं रखता। इसके विपरीत, अपनी सीमाओं को स्वीकार करके उनसे संघर्ष करना ही उनके नायकत्व को अर्थ देता है। यह दृष्टि आधुनिक मानवतावाद के निकट दिखाई देती है, जहाँ मनुष्य की महानता उसकी पूर्णता में नहीं, बल्कि संघर्ष करने और स्वयं को विकसित करने की क्षमता में निहित होती है। नवजागरण का संबंध **सामाजिक परिवर्तन** से भी है। व्यक्ति का आत्मजागरण तभी व्यापक

अर्थ ग्रहण करता है जब वह सामाजिक चेतना से जुड़ता है। *राम की शक्ति पूजा* में राम का संघर्ष व्यक्तिगत होते हुए भी एक व्यापक नैतिक संघर्ष का प्रतिनिधित्व करता है। अन्याय और अधर्म के विरुद्ध संघर्ष का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत विजय नहीं है। इस प्रकार व्यक्तिगत शक्ति सामूहिक नैतिक उद्देश्य से जुड़ जाती है। यही बिंदु कविता को व्यापक सामाजिक चेतना की ओर ले जाता है। कविता में **अंधकार और प्रकाश** का वैचारिक संबंध भी नवजागरण की अवधारणा को मजबूत करता है। अंधकार को निराशा, संकट और चेतना की निष्क्रियता के रूप में पढ़ा जा सकता है, जबकि प्रकाश जागृति, संकल्प और दिशा का प्रतीक बनता है। राम की मानसिक यात्रा अंधकार से प्रकाश की ओर जाने वाली यात्रा है। यह यात्रा व्यक्ति की आंतरिक चेतना के जागरण का रूपक बनती है और इसी कारण नवजागरण के व्यापक अर्थ से जुड़ती है। निराला का नवजागरण-बोध **आस्था और विवेक** के बीच भी एक संवाद स्थापित करता है। शक्ति की आराधना कविता में उपस्थित है, लेकिन उसे केवल चमत्कारिक धार्मिक समाधान के रूप में नहीं देखा जा सकता। पूजा राम के आत्ममंथन और आत्मबल से जुड़ी हुई है। इससे स्पष्ट होता है कि निराला आस्था को आधुनिक विवेक से अलग नहीं करते। वे धार्मिक प्रतीक को मनुष्य की आंतरिक चेतना और नैतिक शक्ति से जोड़कर उसका नया अर्थ निर्मित करते हैं।

यह दृष्टि हिंदी साहित्य के आधुनिक विकास में महत्वपूर्ण है क्योंकि यह बताती है कि आधुनिक चेतना हमेशा परंपरा के विरोध से निर्मित नहीं होती। कई बार आधुनिकता परंपरा के पुनर्पाठ से भी उत्पन्न होती है। निराला का योगदान इसी संदर्भ में उल्लेखनीय है। उन्होंने भारतीय सांस्कृतिक प्रतीकों को आधुनिक प्रश्नों के साथ जोड़कर साहित्य को एक ऐसी वैचारिक भूमि प्रदान की जहाँ अतीत और वर्तमान के बीच सक्रिय संवाद संभव हुआ। *राम की शक्ति पूजा* में यह संवाद विशेष रूप से **राम और शक्ति** के संबंध में दिखाई देता है। राम परंपरा के नायक हैं, लेकिन उनकी शक्ति की खोज आधुनिक मनुष्य की आत्मखोज का रूप ले लेती है। देवी शक्ति भारतीय सांस्कृतिक परंपरा का प्रतीक हैं, किंतु उनकी आराधना आत्मबल और संघर्ष की आधुनिक चेतना में रूपांतरित होती है। इस प्रकार परंपरागत प्रतीक आधुनिक अर्थ ग्रहण करता है और मिथक वर्तमान की सामाजिक तथा मानवीय समस्याओं से जुड़ जाता है।

निराला का नवजागरण-बोध इसलिए केवल बाहरी सामाजिक परिवर्तन की आकांक्षा नहीं है। उसका आधार **मानसिक और नैतिक परिवर्तन** है। व्यक्ति के भीतर आत्मविश्वास, स्वतंत्र विचार, संघर्षशीलता और न्याय-बोध विकसित हुए बिना व्यापक सामाजिक परिवर्तन स्थायी नहीं हो सकता। *राम की शक्ति पूजा* में राम का आत्मजागरण इसी व्यापक परिवर्तन की संभावित पहली अवस्था के रूप में देखा जा सकता है।

अतः *राम की शक्ति पूजा* में निराला का नवजागरण-बोध परंपरा के आलोचनात्मक पुनर्पाठ, आधुनिक आत्मचेतना, मानवीय गरिमा, संघर्षशीलता और सामाजिक परिवर्तन की आकांक्षा के समन्वय से निर्मित होता है। वे रामकथा को अतीत की पुनरावृत्ति नहीं बनने देते, बल्कि उसे वर्तमान मनुष्य के संकट और उसकी संभावनाओं से जोड़ते हैं। इसी प्रक्रिया में शक्ति धार्मिक प्रतीक से आगे बढ़कर **आत्मजागरण और परिवर्तन की ऊर्जा** बनती है।

इस प्रकार निराला की दृष्टि में नवजागरण का अर्थ केवल जागना नहीं, बल्कि **अपनी शक्ति को पहचानना, रुढ़ अर्थों पर प्रश्न करना, आत्मसंशय से ऊपर उठना और परिवर्तन के लिए सक्रिय होना** है। *राम की शक्ति पूजा* इसी चेतना की काव्यात्मक अभिव्यक्ति है, जहाँ भारतीय मिथक आधुनिक मनुष्य के आत्मसंघर्ष और सामाजिक जागरण का माध्यम बन जाता है।

6. शक्ति और राष्ट्रीय-सामाजिक चेतना

राम की शक्ति पूजा में शक्ति की अवधारणा का विस्तार व्यक्तिगत आत्मबल से आगे बढ़कर सामाजिक और सामूहिक चेतना तक होता है। कविता का मूल प्रसंग राम और रावण के संघर्ष से संबंधित है, किंतु निराला इस संघर्ष को केवल पौराणिक युद्ध के रूप में प्रस्तुत नहीं करते। राम की आंतरिक दुर्बलता, शक्ति की खोज और पुनः संघर्ष के लिए उनका संकल्प व्यापक स्तर पर उस चेतना का संकेत देते हैं जिसमें व्यक्ति अन्याय, संकट और प्रतिकूल परिस्थितियों के सामने सक्रिय भूमिका ग्रहण करता है। इस दृष्टि से शक्ति का व्यक्तिगत अनुभव सामाजिक अर्थ ग्रहण करने लगता है। निराला जिस ऐतिहासिक समय में सक्रिय थे, वह भारतीय समाज में गहरे राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवर्तन का काल था। औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध स्वतंत्रता आंदोलन, सामाजिक सुधार, राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक आत्मपहचान के प्रश्न साहित्यिक अभिव्यक्ति को प्रभावित कर रहे थे। ऐसे वातावरण में भारतीय मिथकों और सांस्कृतिक प्रतीकों का पुनर्पाठ एक महत्वपूर्ण साहित्यिक प्रक्रिया बना। किंतु राम की शक्ति पूजा को केवल राजनीतिक रूपक मान लेना कविता की बहुस्तरीयता को सीमित कर देगा। अधिक उचित यह है कि कविता में उपस्थित संघर्ष, आत्मबल और जागरण की अवधारणाओं को उस व्यापक ऐतिहासिक वातावरण के साथ संवाद में देखा जाए। कविता में राम और रावण का संघर्ष नैतिक और वैचारिक स्तर पर भी अर्थ ग्रहण करता है। राम न्याय, मर्यादा और धर्म के पक्ष में खड़े हैं, जबकि रावण का चरित्र अहंकार और शक्ति के केंद्रीकरण से जुड़ा हुआ है। इस विरोध के कारण युद्ध केवल दो व्यक्तियों के बीच संघर्ष नहीं रह जाता। यह उन मूल्यों के बीच संघर्ष का रूप ग्रहण करता है जिनके आधार पर समाज अपने नैतिक जीवन को व्यवस्थित करता है। शक्ति की आराधना इसी नैतिक संघर्ष को प्रभावी बनाने वाली ऊर्जा के रूप में सामने आती है।

यहाँ शक्ति को न्यायपूर्ण उद्देश्य के लिए आवश्यक सामर्थ्य के रूप में देखा जा सकता है। केवल नैतिक आदर्श पर्याप्त नहीं हैं; उनके संरक्षण और कार्यान्वयन के लिए सक्रिय शक्ति की आवश्यकता होती है। राम के सामने यही समस्या है। वे सही उद्देश्य के पक्ष में हैं, लेकिन परिस्थितियाँ उनके अनुकूल नहीं हैं। शक्ति की साधना इस अंतर को भरती है। इस प्रकार निराला आदर्श और शक्ति के बीच एक आवश्यक संबंध स्थापित करते हैं।

शक्ति का यह सामाजिक अर्थ व्यक्ति की जिम्मेदारी से जुड़ा है। यदि व्यक्ति अपनी परिस्थितियों के प्रति केवल निष्क्रिय दर्शक बना रहे, तो सामाजिक परिवर्तन संभव नहीं होता। राम का आत्मजागरण उन्हें पुनः कर्म की ओर ले जाता है। इस दृष्टि से शक्ति का अर्थ केवल व्यक्तिगत क्षमता नहीं, बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी को निभाने की क्षमता भी है। व्यक्ति का आत्मबल तब सार्थक होता है जब वह व्यापक नैतिक उद्देश्य से जुड़ा है।

यहीं से कविता में व्यक्तिगत चेतना और सामूहिक चेतना के बीच संबंध स्थापित होता है। राम का संघर्ष व्यक्तिगत है, किंतु जिस उद्देश्य के लिए वे संघर्ष कर रहे हैं वह व्यक्तिगत हित से आगे है। इसी प्रकार किसी समाज का जागरण भी व्यक्तियों की चेतना से आरंभ होता है। जब व्यक्ति अन्याय, असमानता और दमन के प्रति सजग होता है, तब व्यक्तिगत जागरूकता धीरे-धीरे सामूहिक चेतना का रूप ले सकती है। इस प्रक्रिया को नवजागरण की व्यापक अवधारणा से जोड़ा जा सकता है। भारतीय नवजागरण की पृष्ठभूमि में सांस्कृतिक आत्मसम्मान का प्रश्न भी महत्वपूर्ण रहा है। औपनिवेशिक आधुनिकता के संपर्क में भारतीय समाज के सामने अपनी परंपरा, संस्कृति और सामाजिक संरचनाओं को नए ढंग से समझने की चुनौती थी। निराला की रचनात्मकता में भारतीय सांस्कृतिक प्रतीकों का आधुनिक पुनर्पाठ इसी आत्मसम्मान की खोज से जुड़ा दिखाई देता है। राम की शक्ति पूजा में राम और शक्ति जैसे प्रतीकों को आधुनिक चेतना से जोड़ना भारतीय परंपरा को नए अर्थों में पुनर्स्थापित करने का प्रयास माना जा सकता है।

हालाँकि इस सांस्कृतिक पुनर्पाठ को अतीत की पूर्ण महिमामंडित पुनरावृत्ति के रूप में नहीं देखना चाहिए। निराला की विशेषता यह है कि वे परंपरा के भीतर से **आलोचनात्मक और परिवर्तनकारी अर्थ** निकालते हैं। राम को सर्वशक्तिमान देवता के बजाय संघर्षशील मनुष्य के रूप में प्रस्तुत करना स्वयं पारंपरिक छवि का पुनर्गठन है। इसी प्रकार शक्ति को बाहरी दैवी सत्ता से आगे बढ़ाकर आत्मबल और जागरण से जोड़ना भी परंपरा के भीतर आधुनिक अर्थ की खोज है। इस संदर्भ में **राष्ट्रीय चेतना** को भी व्यापक अर्थ में समझना आवश्यक है। राष्ट्रीय चेतना केवल राजनीतिक स्वतंत्रता की आकांक्षा नहीं, बल्कि सामूहिक आत्मसम्मान, स्वतंत्रता-बोध, नैतिक जिम्मेदारी और सामाजिक एकता से भी संबंधित है। *राम की शक्ति पूजा* में व्यक्ति की शक्ति और सामूहिक उद्देश्य का संबंध इस व्यापक चेतना से संवाद करता है। राम का संघर्ष ऐसी नैतिक ऊर्जा का प्रतीक बन सकता है जिसमें व्यक्ति निजी सीमाओं से आगे बढ़कर व्यापक उद्देश्य के लिए सक्रिय होता है।

कविता में शक्ति का स्त्री-रूप भी सामाजिक चेतना के लिए महत्वपूर्ण संकेत देता है। राम जैसे पुरुष नायक का शक्ति के समक्ष नतमस्तक होना इस बात को रेखांकित करता है कि शक्ति को केवल पुरुष-प्रधान सामर्थ्य के रूप में नहीं समझा जा सकता। भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में देवी को शक्ति के रूप में स्थापित करने वाली अवधारणा को निराला आधुनिक संदर्भ में सक्रिय करते हैं। इससे शक्ति की अवधारणा अधिक समावेशी और जीवनदायी बनती है। **सामाजिक परिवर्तन** के स्तर पर कविता का महत्व इस बात में है कि वह व्यक्ति को निष्क्रिय भाग्यवाद से हटाकर कर्म और संकल्प की ओर ले जाती है। संकट की स्थिति में राम परिस्थितियों को अंतिम सत्य के रूप में स्वीकार नहीं करते। वे आत्ममंथन करते हैं, शक्ति की खोज करते हैं और फिर संघर्ष के लिए तैयार होते हैं। यह प्रक्रिया आधुनिक सामाजिक चेतना के उस पक्ष से जुड़ती है जिसमें मनुष्य अपने वर्तमान को अपरिवर्तनीय मानने के बजाय उसमें परिवर्तन की संभावना खोजता है।

इस प्रकार शक्ति की अवधारणा **प्रतिरोध की चेतना** से भी जुड़ती है। अन्याय या दमन के सामने प्रतिरोध के लिए केवल असंतोष पर्याप्त नहीं होता; उसके लिए आत्मविश्वास, संगठन, नैतिक दृढ़ता और उद्देश्यपूर्ण कर्म की आवश्यकता होती है। कविता में राम का पुनः संघर्ष के लिए तैयार होना इसी सक्रिय चेतना का प्रतीकात्मक रूप है। इसलिए शक्ति यहाँ परिवर्तन की संभाव्यता को वास्तविक कर्म में बदलने वाली ऊर्जा है।

फिर भी कविता को केवल राष्ट्रवादी अर्थों में सीमित करना उचित नहीं होगा। इसकी शक्ति की अवधारणा का विस्तार व्यक्तिगत, नैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक सभी स्तरों पर है। राष्ट्रीय चेतना इस व्यापक संरचना का एक महत्वपूर्ण आयाम है, उसका एकमात्र अर्थ नहीं। यही बहुस्तरीयता *राम की शक्ति पूजा* को विभिन्न ऐतिहासिक और सामाजिक संदर्भों में पुनर्पाठ योग्य बनाती है।

निराला का योगदान इस बात में भी महत्वपूर्ण है कि उन्होंने **पौराणिक पात्रों को आधुनिक मनुष्य की समस्याओं से जोड़ा**। राम का संकट आधुनिक व्यक्ति के आत्मसंघर्ष का रूप लेता है और उनकी शक्ति-प्राप्ति आत्मविश्वास तथा सामाजिक जिम्मेदारी की ओर बढ़ने की प्रक्रिया बन जाती है। इस प्रकार मिथक वर्तमान के प्रश्नों को व्यक्त करने का माध्यम बनता है। अतीत और वर्तमान के बीच यह संवाद साहित्य को सांस्कृतिक निरंतरता के साथ-साथ परिवर्तन की संभावना भी प्रदान करता है। इस दृष्टि से *राम की शक्ति पूजा* में राष्ट्रीय और सामाजिक चेतना किसी प्रत्यक्ष राजनीतिक घोषणापत्र के रूप में नहीं, बल्कि **संघर्षशील नैतिक चेतना** के रूप में उपस्थित है। कविता व्यक्ति को अपनी शक्ति पहचानने, संकट से जूझने और न्यायपूर्ण उद्देश्य के लिए सक्रिय होने की प्रेरणा देती है। व्यक्तिगत आत्मबल जब व्यापक सामाजिक उद्देश्य से जुड़ता है, तभी वह सामूहिक परिवर्तन की ऊर्जा बन सकता है। अतः *राम की शक्ति पूजा* में शक्ति का अर्थ केवल युद्ध-विजय की क्षमता नहीं है। वह

आत्मबल, नैतिक साहस, प्रतिरोध, सामाजिक जिम्मेदारी और सामूहिक जागरण की संयुक्त अवधारणा है। राम की व्यक्तिगत शक्ति-प्राप्ति इसी व्यापक प्रक्रिया का आरंभिक रूप है। इसीलिए कविता में शक्ति व्यक्तिगत मुक्ति से आगे बढ़कर सामाजिक और सांस्कृतिक जागरण का संकेत देती है।

इस प्रकार निराला की कविता में शक्ति और राष्ट्रीय-सामाजिक चेतना का संबंध किसी एक ऐतिहासिक घटना तक सीमित नहीं है। यह उस व्यापक मानवीय और सामाजिक प्रक्रिया को व्यक्त करता है जिसमें व्यक्ति अपनी आंतरिक शक्ति को पहचानकर अन्याय और संकट के विरुद्ध सक्रिय होता है। इसी बिंदु पर *राम की शक्ति पूजा* का मिथकीय आख्यान आधुनिक नवजागरण, सामाजिक चेतना और मानवीय संघर्ष के व्यापक विमर्श से जुड़ जाता है।

8. निष्कर्ष: शक्ति से नवजागरण तक

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की *राम की शक्ति पूजा* हिंदी कविता में पौराणिक आख्यान के आधुनिक पुनर्पाठ का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। इस कविता का महत्व केवल इतना नहीं है कि इसमें राम और शक्ति जैसे परिचित पौराणिक प्रतीकों का पुनः उपयोग किया गया है, बल्कि इसका वास्तविक महत्व इस बात में है कि निराला इन प्रतीकों को आधुनिक मनुष्य की मानसिक, नैतिक और सामाजिक समस्याओं से जोड़ते हैं। परिणामतः मिथक अतीत की स्थिर स्मृति न रहकर वर्तमान की चेतना को व्यक्त करने वाला सक्रिय माध्यम बन जाता है।

कविता में **शक्ति** की अवधारणा इसका केंद्रीय वैचारिक आधार है। शक्ति को केवल देवी की आराधना या बाहरी दैवी सामर्थ्य के रूप में देखना कविता के व्यापक अर्थ को सीमित कर देता है। निराला के यहाँ शक्ति आत्मबल, संकल्प, नैतिक साहस, संघर्षशीलता और परिवर्तन की ऊर्जा का समन्वित रूप है। राम की शक्ति-साधना वस्तुतः अपनी आंतरिक शक्ति की पुनर्खोज की प्रक्रिया है। इस अर्थ में शक्ति बाहरी कृपा से अधिक आंतरिक जागरण का प्रतीक बन जाती है। राम का चरित्र भी इसी प्रक्रिया में एक नए अर्थ का निर्माण करता है। पारंपरिक धार्मिक चेतना में राम मर्यादा, धर्म और आदर्श के प्रतीक हैं, किंतु निराला उन्हें संशय, पीड़ा, असफलता और आत्मसंघर्ष से गुजरने वाले मनुष्य के रूप में प्रस्तुत करते हैं। यह **राम का मानवीकरण** कविता की आधुनिकता का महत्वपूर्ण आधार है। यहाँ नायक जन्म से सर्वशक्तिमान नहीं है; वह संघर्ष के भीतर अपनी शक्ति को पहचानता है। इस प्रकार वीरता किसी पूर्वनिर्धारित दैवी गुण के रूप में नहीं, बल्कि आत्मसंघर्ष से अर्जित चेतना के रूप में सामने आती है। राम का बाहरी संघर्ष उनके आंतरिक संघर्ष का विस्तार बन जाता है। युद्ध की परिस्थिति उन्हें अपने भीतर झाँकने के लिए बाध्य करती है। संशय से आत्ममंथन, आत्ममंथन से शक्ति-बोध और शक्ति-बोध से पुनः संकल्प की जो प्रक्रिया निर्मित होती है, वही कविता के भीतर **आत्मजागरण की संरचना** को निर्धारित करती है। इस दृष्टि से पराजय अंत नहीं है; वह आत्मपहचान और पुनर्निर्माण का आरंभ बन जाती है। निराला की आधुनिक चेतना इसी बिंदु पर विशेष रूप से दिखाई देती है। कविता में शक्ति और आत्मसमर्पण का संबंध भी उल्लेखनीय है। शक्ति के समक्ष राम का झुकना निष्क्रिय आत्मसमर्पण नहीं है। इसके विपरीत, यह आत्मबोध और आत्मनिर्भरता की ओर जाने वाली प्रक्रिया है। अपने अहं और सीमाओं की पहचान के बाद ही व्यक्ति वास्तविक शक्ति को ग्रहण कर सकता है। इसलिए कविता में आत्मसमर्पण और आत्मबल परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक दिखाई देते हैं। यह दृष्टि निराला की शक्ति-अवधारणा को आध्यात्मिकता से आगे बढ़ाकर मनोवैज्ञानिक और नैतिक धरातल प्रदान करती है।

इसी प्रक्रिया में **परंपरा और आधुनिकता का संवाद** स्थापित होता है। निराला न तो परंपरा को यथावत स्वीकार करते हैं और न ही आधुनिकता के नाम पर उससे पूर्ण विच्छेद करते हैं। वे पौराणिक कथा के भीतर आधुनिक

मनुष्य की समस्याओं को खोजते हैं और पारंपरिक प्रतीकों को नए अर्थ प्रदान करते हैं। राम और शक्ति का पुनर्पाठ इसी रचनात्मक प्रक्रिया का परिणाम है। इस प्रकार आधुनिकता यहाँ पश्चिमी प्रभाव की मात्र प्रतिलिपि नहीं, बल्कि अपनी सांस्कृतिक परंपरा की आलोचनात्मक पुनर्व्याख्या से उत्पन्न होने वाली चेतना है।

यही बिंदु *राम की शक्ति पूजा* को **नवजागरण बोध** से जोड़ता है। नवजागरण का अर्थ केवल सामाजिक या राजनीतिक परिवर्तन नहीं, बल्कि मनुष्य के भीतर प्रश्न करने, आत्मसम्मान विकसित करने, रूढ़ अर्थों को पुनर्विचार के लिए प्रस्तुत करने और परिवर्तन की आवश्यकता को स्वीकार करने वाली चेतना भी है। राम की आत्मसंघर्षपूर्ण यात्रा इस आंतरिक जागरण का काव्यात्मक रूप है। शक्ति की प्राप्ति वास्तव में स्वयं को पहचानने और अपनी सक्रिय क्षमता को पुनर्स्थापित करने की प्रक्रिया बन जाती है।

निराला की नवजागरण चेतना व्यक्तिगत स्तर पर रुकती नहीं है। व्यक्तिगत आत्मबल जब व्यापक नैतिक उद्देश्य से जुड़ता है, तब वह **सामाजिक और सामूहिक चेतना** का आधार बनता है। राम का संघर्ष निजी विजय के लिए नहीं है; वह व्यापक न्याय और धर्म की स्थापना से जुड़ा है। इसीलिए कविता में शक्ति व्यक्तिगत ऊर्जा से आगे बढ़कर सामाजिक परिवर्तन की संभाव्यता का प्रतीक बनती है। व्यक्ति का जागरण सामूहिक जागरण की दिशा में पहला कदम बन सकता है। कविता का यह पक्ष उसके ऐतिहासिक संदर्भ में भी महत्वपूर्ण हो जाता है। औपनिवेशिक भारत में राष्ट्रीय आत्मसम्मान, स्वतंत्रता, सामाजिक सुधार और सांस्कृतिक आत्मपहचान के प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण थे। ऐसे समय में भारतीय मिथकीय प्रतीकों का आधुनिक पुनर्पाठ सांस्कृतिक चेतना के निर्माण का एक माध्यम बन सकता था। *राम की शक्ति पूजा* को सीधे किसी राजनीतिक घटना का रूपक मानना उचित नहीं होगा, लेकिन उसमें उपस्थित आत्मबल, संघर्ष, नैतिक दृढ़ता और जागरण की चेतना उस व्यापक ऐतिहासिक वातावरण के साथ सार्थक संवाद करती है। कविता में स्त्री-शक्ति की उपस्थिति भी इसके आधुनिक अर्थ को विस्तृत करती है। राम जैसे पुरुष नायक का शक्ति के समक्ष आत्मनिवेदन इस बात को रेखांकित करता है कि शक्ति का स्रोत केवल पुरुष-प्रधान वीरता में नहीं है। शक्ति को स्त्री-तत्त्व के रूप में स्वीकार करना पारंपरिक शक्ति-दर्शन को आधुनिक संवेदना से जोड़ता है। इससे कविता में शक्ति की अवधारणा अधिक व्यापक, समावेशी और जीवन-परिवर्तनकारी बनती है।

इस प्रकार *राम की शक्ति पूजा* में मिथक, मनोविज्ञान, दर्शन, सामाजिक चेतना और आधुनिकता एक-दूसरे से अलग-अलग स्तरों पर उपस्थित नहीं हैं, बल्कि एक-दूसरे में अंतःसंबंधित हैं। **राम का संघर्ष मनुष्य का संघर्ष है, शक्ति की साधना आत्मबल की खोज है और विजय की आकांक्षा परिवर्तन की चेतना से जुड़ जाती है।** यही अंतर्संबंध कविता को केवल धार्मिक या पौराणिक काव्य से ऊपर उठाकर आधुनिक मानवतावादी काव्य का स्वर प्रदान करता है। अंततः कहा जा सकता है कि *राम की शक्ति पूजा* में 'शक्ति' से 'नवजागरण' तक की यात्रा **व्यक्ति की आंतरिक चेतना से आरंभ होकर व्यापक सामाजिक चेतना तक पहुँचती है।** निराला के यहाँ शक्ति कोई स्थिर सत्ता नहीं, बल्कि जाग्रत होने वाली ऊर्जा है; राम कोई निष्क्रिय आदर्श नहीं, बल्कि संघर्ष के माध्यम से स्वयं को पुनर्निर्मित करने वाला मनुष्य हैं; और मिथक कोई मृत अतीत नहीं, बल्कि वर्तमान को समझने और बदलने का सांस्कृतिक माध्यम है। इसीलिए *राम की शक्ति पूजा* का स्थायी महत्व उसके पौराणिक कथानक में नहीं, बल्कि उसके द्वारा निर्मित उस आधुनिक चेतना में है जो मनुष्य को अपनी सीमाओं से परिचित कराते हुए अपनी शक्ति को पहचानने, आत्मसंघर्ष से गुजरने और व्यापक परिवर्तन के लिए सक्रिय होने की प्रेरणा देती है। **निराला के लिए शक्ति अंततः जागरण की ऊर्जा है और जागरण केवल आत्मबोध नहीं, बल्कि जीवन और समाज को नए अर्थों में देखने की क्षमता है।** यही शक्ति-चेतना *राम की शक्ति पूजा* को हिंदी साहित्य में नवजागरण, संघर्ष और आधुनिक मानवीय चेतना की एक महत्वपूर्ण काव्यात्मक अभिव्यक्ति बनाती है।

संदर्भ सूची

1. अग्रवाल, रामविलास. (1987). *निराला की साहित्य साधना*. राजकमल प्रकाशन.
2. अग्रवाल, रामविलास. (1996). *भारतीय साहित्य की भूमिका*. राजकमल प्रकाशन.
3. अज्ञेय, सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन. (1985). *आत्मनेपद*. भारतीय ज्ञानपीठ.
4. आचार्य, रामचंद्र शुक्ल. (2002). *हिंदी साहित्य का इतिहास*. नागरी प्रचारिणी सभा.
5. गुप्त, गणपति चंद्र. (1974). *हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास*. लोकभारती प्रकाशन.
6. निराला, सूर्यकांत त्रिपाठी. (2005). *रग-विराग*. लोकभारती प्रकाशन.
7. निराला, सूर्यकांत त्रिपाठी. (2007). *अनामिका*. लोकभारती प्रकाशन.
8. निराला, सूर्यकांत त्रिपाठी. (2010). *परिमल*. लोकभारती प्रकाशन.
9. निराला, सूर्यकांत त्रिपाठी. (2012). *कविता के कान*. लोकभारती प्रकाशन.
10. पंत, सुमित्रानंदन. (2004). *पल्लव*. राजकमल प्रकाशन.
11. प्रसाद, जयशंकर. (2009). *कामायनी*. राजकमल प्रकाशन.
12. शर्मा, रामविलास. (1983). *निराला की साहित्य साधना: जीवन और व्यक्तित्व*. राजकमल प्रकाशन.
13. शर्मा, रामविलास. (1988). *निराला की साहित्य साधना: भाषा और छंद*. राजकमल प्रकाशन.
14. शुक्ल, रामचंद्र. (2002). *चिंतामणि: भाग 1*. नागरी प्रचारिणी सभा.
15. द्विवेदी, हजारीप्रसाद. (1996). *हिंदी साहित्य: उद्भव और विकास*. राजकमल प्रकाशन.
16. द्विवेदी, हजारीप्रसाद. (2004). *कबीर*. राजकमल प्रकाशन.
17. नामवर सिंह. (2001). *छायावाद*. राजकमल प्रकाशन.
18. नामवर सिंह. (2005). *इतिहास और आलोचना*. राजकमल प्रकाशन.
19. नगेन्द्र. (2003). *हिंदी साहित्य का इतिहास*. नेशनल पब्लिशिंग हाउस.
20. नगेन्द्र. (2004). *आधुनिक हिंदी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ*. नेशनल पब्लिशिंग हाउस.